1

तीर्थंकरवत् कहान गुरु ने...

तीर्थंकरवत् कहान गुरु ने, कैसा गजब का काम किया।
दिव्यवाणी कर तीर्थंकर का, विरह हमें भुला दिया॥
मिथ्यातम की घटा हटाकर, ज्ञान-भानु प्रकाश किया।
जिनागम का सार बताकर, जीवों का उद्धार किया॥

भक्ति भावना उर में जागी, याद तुम्हारी आती है।
कहाँ गये तुम कहान गुरु, तेरी याद हमें रुलाती है॥
तुम आदर्श हमारे हो, ये **मङ्गलायतन** तुम्हारा है।
जय-जयकार से गुरुवर तुम्हारी, गूँजा जग ये सारा है॥
गूँजा जग ये सारा है।